हे कान्हा मोहे, बहुत सतावत तोरी अंखिया,

हे कान्हा मोहे, बहुत सतावत तोरी अंखिया,
चहुँ दिस में कहूँ ठौर नाही मोहे , मोरे पीछे पीछे आवत तोरी अंखिया,
हे कान्हा मोहे, बहुत सतावत तोरी अंखिया ।

मेरो मन मंदिर में ऐसो बसो है , मोहे हर पल लुभावत तोरी अंखिया,
हे कान्हा मोहे, बहुत सतावत तोरी अंखिया ।

त्रिभुवन में कोई ऐसो नाही है ,जैसो तीर चलावत तोरी अंखिया,
हे कान्हा मोहे, बहुत सतावत तोरी अंखिया ।

भवसागर में भटक रहा मैं, काहे नाही पार लगावत तोरी अंखिया,
हे कान्हा मोहे, बहुत सतावत तोरी अंखिया।

रचनाकार : ज्योति नारायण पाठक , रेनुसागर सोनभद्र , 09598050551

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/2568/title/hey-kanha-mohe-bhut-satavat-tori-akhiya

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |